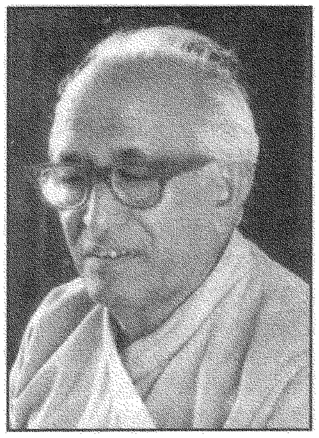

विजयदान देथा
VIJAYDAN DETHA

विजयदान देथा, जिन्हें साहित्य अकादेमी आज अपनी महत्तर सदस्यता से सम्मानित करने जा रही है, अनेक दृष्टियों से आधुनिक भारतीय कथा-साहित्य के एक सर्वथा मौलिक और अनूठे हस्ताक्षर हैं। वाचिक परंपरा की लोककथाओं के लेखन से शुरू हुई आपकी यह कथायात्रा आज जिस मकाम पर पहुँची है, वह कदाचित् भारतीय कथा-साहित्य की एक अत्यंत विरल तथा विलक्षण घटना है। कोयल के कुहुकने, मोर के नाचने या तितली के पंख फड़फड़ाने जैसी सहजता का आभास देती आपकी कहानियों में अभिप्राय और अभिव्यंजना की जैसी अद्भुत गूँज सुनाई देती है, वह मुग्धकारी तो होती ही है, विस्मयकारी भी कम नहीं होती। लोककथा के अनंत नभ में उनकी इन मौलिक लेखकीय उड़ान का दूसरा कोई सानी आज भी नज़र नहीं आता और कदाचित् आनेवाले समय को भी इसके लिए लंबी प्रतीक्षा करनी होगी। भारतीय भाषाओं के रचनाकारों के बीच आपको प्यार से 'बिज्जी' कहकर पुकारा जाता है।

बिज्जी का जन्म 1 सितंबर 1926, को राजस्थान के जोधपुर ज़िले के बोरुंदा ग्राम में हुआ। बिज्जी के दादा श्री जुगतीदान देथा राजस्थानी की डिंगळ काव्य-धारा के सुप्रसिद्ध कवि थे, वहीं पिता श्री सबलदान देथा भी पुश्तैनी चारणी काव्य-परंपरा के रचना-कौशल में निपुण थे। बिज्जी की औपचारिक शिक्षा वर्तमान पाली ज़िले के जैतारण क़स्बे की प्राथमिक शाला से शुरू हुई। उच्च प्राथमिक की पढ़ाई करने उन्हें बाड़मेर जाना पड़ा। यहाँ छठी कक्षा में एक कविता की रचना कर आपने अपने लेखकीय जीवन का आगाज़ किया। शाला के मुख्याध्यापक श्री प्रहलाद राय के स्नेहिल व्यक्तित्व ने आपके मन पर गहरी छाप छोड़ी। तदंतर बिज्जी जोधपुर के तत्कालीन दरबार हाई स्कूल में भर्ती हुए। इस स्कूल की पढ़ाई के दौरान बिज्जी की रचनात्मकता का विस्फोट नित्य-नई शरारतें खोजने में हुआ। अंततः मुख्य अध्यापक गजेन्द्र नारायण सिंघल द्वारा पिटाई के लिए उठाई गई छड़ी पकड़ने के परिणामस्वरूप नवीं कक्षा में यह स्कूल छोड़ना पड़ा। फिर अपने चचेरे भाई श्री कुबेरदान देथा की प्रेरणा और संबल से किसी तरह पंजाब बोर्ड से मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की और जोधपुर के जसवंत कॉलेज में उच्च शिक्षा के लिए प्रवेश ले लिया। इस कॉलेज में शिक्षा के दौरान सन् 1947 में उनका *उषा* नामक प्रथम काव्य-संग्रह प्रकाशित हुआ। यह काव्य-संकलन भी वस्तुतः एक रचनात्मक शरारत ही था। उषा पाठक नामक एक लड़की बिज्जी की सहपाठिन थी। 'सूर्योदय एवं संध्या का चित्रण' वाले श्लेष की आड़ में इस संकलन की कविताएँ इसी उषा पाठक को संबोधित थीं।

जसवंत कॉलेज की पढ़ाई के दौरान पहली बार बिज्जी शरत्-साहित्य के संपर्क में आए। शरत्-साहित्य के अवगाहन ने बिज्जी के जीवन की दिशा ही बदल दी। बी.ए. की पढ़ाई के दिनों में ही रूसी कथाकार एंतोन चेखोव

Vijaydan Detha, on whom Sahitya Akademi is today conferring its highest honour of Fellowship, is an original and unmatched signature of Indian fiction, in many aspects. Beginning with writings based on the oral tradition of folktale-telling, he has by now created perhaps a rare, unparallelled epoch in the history of narrative art. Like the cooing of a cuckoo, the dance of a peacock or the wing-beats of a butterfly, his writing is seemingly effortless but at the same time, his stories abound in multi-layered meanings and significations. The stories, fascinating as they are, never fail to astound the reader. In the infinite firmament of folktales, his writerly flight would remains nonpareil, not only in the present, but certainly for a long time to come. The writers of this country affectionately call him 'Bijji'.

Bijji was born on 1 September 1926 in the Borunda village of Jodhpur district. His grandfather, Jugatidan Detha was a famous poet in the Dingal poetic tradition in Rajasthani. His father Sabaldan Detha was also an accomplished poet. Bijji's formal education began in Jaitaran township in what is now the Pali district. He went to Barmer for his middle school education. Here he began his life as a writer, with a poem he wrote when he was studying in Class VI. The headmaster of this school, Mr. Prahlad Rai, who was a very affectionate person, got a firm impression of the child's talent. After this, Bijji was admitted to the then Durbar High School of Jodhpur. While studying in this school, his creativity exploded in the form of various pranks amongst his schoolfellows. Ultimately what happened was that he was rusticated, as he ran away from the school when the headmaster, Gajendra Narayan Singhal caught hold of him one day to inflict corporal punishment. Later, his cousin Kuberdan Detha inspired him and supported him to take the Matriculation examination from the Punjab Board. Finishing his school final, he joined Jaswant College, Jodhpur, for his higher education. As he was studying in this college, his first book *Usha*, a poetry-collection in Hindi, was published. This book too was another form of a creative prank—he named the book after a classmate of his, Usha Pathak. The sub-title of the book explains it all: *A Depiction of Sunrise and Sunset.*

की कहानियाँ भी पढ़ीं। इन दोनों दिग्गज कथाकारों ने मानो बिज्जी की रचनात्मकता को ललकार दिया और वे इनका पारायण ही करने लगे।

बिज्जी ने अपनी लेखन-यात्रा हिन्दी से शुरू की थी। जोधपुर से प्रकाशित होनेवाले *ज्वाला* साप्ताहिक में 'दोज़ख की सैर', 'घनश्याम पर्दा गिराओ' तथा 'हम सभी मानव हैं' कॉलम लंबे समय तक नियमित रूप से लिखे। 1949 से 1952 तक इस दौर में *ज्वाला, आग, अंगारे* तथा *रियासती साप्ताहिक* में आपने भरपूर कलम माँजी। अनेक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन तथा सह-लेखन करते हुए अकस्मात् बिज्जी के जीवन में एक निर्णायक मोड़ आया। सन् 1959 में उन्होंने हिन्दी छोड़कर राजस्थानी में लिखने का संकल्प लिया और अपने गाँव बोरुंदा लौट आए। *बातां री फुलवाड़ी* शीर्षक से लोक-कथाओं के पुनर्सृजन की उनकी यात्रा यहीं से आरंभ हुई। इन कहानियों की लेखन-प्रक्रिया, बकौल बिज्जी, यह रही कि 'न लिखने से पहले सोचा, न लिखकर पढ़ा और न लिखकर कुछ काटा।' इधर छापे की मशीन थी, उधर बिज्जी की कलम। मशीन के साथ मन से होड़ करते हुए *बातां री फुलवाड़ी* के 14 भाग तैयार हो गए। इन्हीं 14 भागों में से एक *बातां री फुलवाड़ी* (भाग-10) पर बिज्जी को राजस्थानी भाषा का पहला साहित्य अकादेमी पुरस्कार सन् 1974 में प्राप्त हुआ।

प्रख्यात् फ़िल्मकार मणि कौल ने सन् 1973 में आपकी 'दुविधा' कहानी पर एक कथा-फ़िल्म बनाई, तदंतर बिज्जी की कहानियाँ अनुवाद के माध्यम से भारतीय भाषाओं में पहुँची और उन्हें एक विलक्षण कथाकार के रूप में पहचाना जाने लगा। आपकी इस पहचान के निर्माण में हिन्दी में प्रकाशित आपके दो कहानी-संग्रहों *दुविधा व अन्य कहानियाँ* और *उलझन* की बड़ी भूमिका रही। हिन्दी ने बिज्जी को बेहद मान देकर स्वीकार किया और हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं ने आपकी कहानियाँ प्रमुखता से छापीं। आपके अनुवादक कैलाश कबीर ने राजस्थानी मुहावरे को हिन्दी गद्य की लय में कुछ इस तरह पिरोया कि आपके कहानियों ने हिन्दी पाठकों को एक नए ही आस्वाद के बरक्स ला खड़ा किया। हिन्दी के एक आलोचक ने लिखा, 'यदि हिन्दी के पास एक विजयदान देथा हो, तो हिन्दी कहानी का गतिरोध दूर हो जाए।'

बिज्जी ने हिन्दी प्रकाशकों, आलोचकों, लेखकों तथा पाठकों का ऋण अनेकशः स्वीकार किया है। आपका का मानना है कि एक लेखक के जीवन में अच्छे प्रकाशन की असंदिग्ध महत्ता है। इस बात के उदाहरणस्वरूप आप सन् 1979 में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित अपने संग्रह *दुविधा व अन्य कहानियाँ* को गिनाते हुए कहते हैं कि इसके प्रकाशन का हिन्दी पाठक-संसार की प्रतिक्रिया की रौशनी में खुद आपने अपने कथाकार का एक नया आविष्कार किया।

हिन्दी और अंग्रेज़ी अनुवादों के जरिए बिज्जी की कहानियाँ जैसे-जैसे भारतीय भाषाओं में पहुँचने लगीं, आपकी ख्याति को पंख लग गए।

बातां री फुलवारी 14 भागों के अलावा मुख्यतः हिन्दी में प्रकाशित आपकी रचनाएँ इस प्रकार हैं : *अनोखा पेड़* (बाल कथाएँ), *दुविधा व अन्य कहानियाँ* (1979 व 1995), *उलझन* (1982 व 1996), *फुलवाड़ी भाग-10* (1992), *कब्बूरानी* (बाल कथाएँ) (1992), *चौधराइन की चतुराई* (1997), *सपनप्रिया* (1998), *उजाले के मुसाहिब* (2000), *अंतराल* (1998), *महामिलन* (उपन्यास) (1998), *प्रिय मृणाल* (1998), *मेरौ दरद न जाने कोय* (1998), *लाजवंती* (2001), *प्रतिशोध* (उपन्यास) (2002)।

अंग्रेज़ी में प्रकाशित *दि डिलेमा एंड अदर स्टोरीज* (अनु. रूथ वनिता) तथा मराठी *द्वंद्व* (अनुवादः वनिता सावंत) तथा *बातां री फुलवाड़ी* के गुजराती, मराठी, ओड़िया, बाङ्ला और उर्दू अनुवादों के कारण बिज्जी को

Bijji began his literary journey, thus, in Hindi. In a weekly coming out of Jodhpur, *Jwala,* he wrote three regular columns, *Dojakh ki Sair*, *Ghansyam Purdhah Girao* and *Hum Sabhee Manav Hain* for a long stint, under different pseudonyms. From 1949 to 1952, he wrote voluminously in journals like *Jwala*, *Aag*, *Angare* and *Riyasati Weekly*. Thus, while editing many publications and writing, all of a sudden a critical turn in his life came about. In 1959, he left Hindi behind and resolved that he would write in his mother tongue Rajasthani, and returned to his village, Borunda. Here began the journey of his *Batan Ri Phulwari*, the legendary re-creation of folktales. Bijji describes the process of the writing of these tales: "I never thought before writing, neither did I read later what I wrote. There was no need for any correction." The printing press was there, and there was Bijji's pen as well. His mind was at a kind of competition with the machine. This way, 14 volumes of *Batan Ri Phulwari* came out. The10th among these won the first Sahitya Akademi Award in Rajasthani for Bijji.

The renowned film-maker Mani Kaul made a film out of his short-story "Duvidha" in Hindi, in1973. After this, Bijji's short stories reached several major Indian literatures through translation and the author got ready recognition. Building upon this good will, two of his collections in Hindi, *Duvidha Va Anya Kahanian* and *Uljhan*, did extremely well. Hindi welcomed him warmly and the newspapers and magazines of the language published his stories prominently. Kailash Kabir, Bijji's translator, made it possible that the musicality of the Rajasthani language could be experienced as a new flavour by the Hindi readers. One prominent critic in Hindi wrote: "If there could be just one Vijaydan Detha in Hindi, the short story in this language would be rid of the block it experiences now."

Bijji is ever grateful to the Hindi readers, writers and publishers for their warm acceptance of him. He admits that, in a writer's life, good publication plays a big role. He illustrates this point mentioning that after *Duvidha Va Anya Kahanian* was published by Rajkamal Prakashn in 1979, the readers' response so inspired him that he was able to launch himself again and again with renewed vigour.

Besides the 14 volumes of *Batan Ri Phulwari* in Rajasthani, his important works published in Hindi are: *Duvidha Va Anya Kahanian*, (1979), *Uljhan*(1982), *Phulwari-Volume 10* (1992), *Chaudharayin Ki Chaturai*(1997), *Sapanpriya, Antaraal, Mero Durd Na Jahe Koy, Priya Mrinal*(1998), *Ujale Ke Musahib*(2000), *Lajwanti*(2001), *Pratishodh*(2002), *Anokha Ped* and *Kabburani*(children's writing). *The Dilemma and Other Stories* (translated by Ruth Vanita), *Dwandwa* (Marathi translation by Vanita Sawant) and translations of *Batan Ri Phulwari* in Gujarati, Marathi, Oriya, Bengali and Urdu, served to spread Bijji's fame far and wide.

Besides stories, Bijji has done compilation and editing of folktales and folksongs collected from all over Rajasthan. His *Rajasthani Hindi Kahavat Kosh* in eight volumes is deemed a monumental work. In 1987, he edited a book *Roonkh* in which he presented to the readers a selection of

भरपूर ख्याति मिली है। आठ भागों में प्रकाशित *राजस्थानी-हिन्दी कहावत कोश* बिज्जी का दोनों भाषाओं को एक अमूल्य अवदान है।

कथा-लेखन के अलावा बिज्जी ने संग्रहण, संपादन व पाठ-शोधन जैसे कार्य विपुल परिमाण में अचूक कौशल से संपन्न किए हैं। सन् 1987 में प्रकाशित *रूंख* एक अद्‌भुत ग्रंथ है जिसमें बिज्जी ने अपने पढ़े गए में से एक श्रेष्ठ चयन नयनाभिराम प्रस्तुति के साथ हिन्दी पाठकों को भेंट किया है। आपके द्वारा संपादित *परंपरा* (राजस्थानी त्रैमासिक) के तीन विशिष्ट अंक *लोकगीत, गोरा हट जा* तथा *जेठवे रा सोरठा* राजस्थानी साहित्य की थाती हैं। आपने *प्रेरणा, रूपम, वांणी, लोक-संस्कृति* आदि हिन्दी व राजस्थानी पत्रिकाओं के संपादन का कार्य भी किया है। सन् 1960 में प्रख्यात लोककलाविद् कोमल कोठारी के साथ आपने 'रूपायन संस्थान' नाम से लोक-संस्कृति केन्द्र की स्थापना कर विपुल मात्रा में लोकवाद्यों, लोकगीतों, लोक-संस्कृति के उपादानों का संग्रहण भी किया है जिससे देश-विदेश के जिज्ञासु शोधार्थी अद्यावधि लाभान्वित हो रहे हैं।

बिज्जी की कहानियों का जादू फ़िल्मकारों, नाट्य-निर्देशकों व सीरियल-निर्माताओं के भी सिर चढ़कर बोला है। मणि कौल के अलावा श्याम बेनेगल और प्रकाश झा ने आपकी कहानियों पर फ़िल्में बनाई हैं। फ़िल्मकार अमोल पालेकर भी आपकी दो कहानियों 'दुविधा' तथा 'दोहरी ज़िन्दगी' पर फ़िल्में बनाने का अनुबंध कर चुके हैं। साहित्य अकादेमी की ओर से हिन्दी के सुप्रसिद्ध कथाकार उदय प्रकाश ने सन् 2000 में न केवल स्वयं बिज्जी पर फ़िल्म बनाई वरन् जयपुर दूरदर्शन के लिए 'बिज्जी का ख़ज़ाना' नाम से आधे-आधे घंटे की 10 फ़िल्में भी तैयार की हैं। बिज्जी की दर्जनों कहानियों पर देश के विभिन्न शहरों में नाट्य-मंचन हुए हैं। इनमें से प्रख्यात रंग-निर्देशक हबीब तनवीर द्वारा निर्देशित आपकी कहानी पर आधारित नाटक 'चरणदास चोर' को देश-विदेश में बेहद सराहना मिली है।

'लिखना तो दूर, मैं तो पढ़ना भी अब सीख रहा हूँ' माननेवाले विजयदान देथा उर्फ़ बिज्जी को अब तक अनेक पुरस्कारों से समादृत किया जा चुका है। उनमें साहित्य अकादेमी समेत भारतीय भाषा परिषद, कलकत्ता, बिहारी पुरस्कार, के.के. बिड़ला फाउंडेशन (दिल्ली), नाहर पुरस्कार (मुंबई), राजस्थानी श्री (जयपुर), राजस्थान रा रतन (अजमेर), दी ग्रेट सन ऑफ़ राजस्थान, ऑल इंडिया कांफ्रेंस ऑफ़ इंटेलेक्चुअल्स, मरुधरा, कलकत्ता, दीपचन्द जैन साहित्य पुरस्कार (दिल्ली) प्रमुख हैं। दूरदर्शन व आकाशवाणी ने श्री देथा को इमेरिटस फ़ेलोशिप देकर समादृत किया है। भारतीय ज्ञानपीठ ने राजस्थान के प्रेमाख्यानों पर कथात्मक-लेखन करने के लिए एक वर्षीय फ़ेलोशिप आपको प्रदान की है।

बिज्जी ने एम्स्टर्डाम, बेल्जियम, पेरिस, हम्बुर्ग, फ्रेंकफर्ट, हेडलबर्ग, मास्को, लेनिनग्राद तथा चीन की यात्राएँ भी की हैं।

बिज्जी ने आजीविका के लिए कभी कोई कार्य नहीं किया। अस्सी की हदें छूती वय में वे आज भी किसी किशोर जैसी ऊर्जा के साथ अपने लेखन और पठन में निमग्न हैं। पढ़ने में उन्हें कुछ अच्छा या बुरा लग जाए, तो न लेखक के रुतबे की परवाह करते हैं, न वय का लिहाज—उनकी प्रतिक्रिया सहजस्फूर्त होती है। "रवि बाबू को पढ़ तो मैंने पहले ही लिया था, पर उनके महाप्रकाश में पहली बार 1984 में उनकी कहानी 'स्त्रीर पत्र' पढ़कर ही पहुँच पाया।" ऐसा कहनेवाले कथाकार विजयदान देथा बेहद पढ़ाकू हैं। आपको यह कहते अक्सर पाया जाता है कि मैं पढ़-पढ़कर एक यही सच जान पाया हूँ कि मैं पढ़ना सीख रहा हूँ।

राजस्थानी के इस अनूठे भारतीय कथाकार को अपना सर्वोच्च सम्मान, महत्तर सदस्यता अर्पित करते हुए साहित्य अकादेमी स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रही है।

the best of what he has read from other languages. Though the Rajasthani Quarterly *Parampara* he edited lasted only three special issues—*Lokgeet*, *Gora Hat Ja*, and *Jethve Ra Sortha*—they were outstanding for the worth of their contents. He also edited magazines like *Prerna, Roopam, Vani* and *Loksanskriti* in Hindi and Rajasthani. In 1960 he founded, along with the famous folk art connoisseur Komal Kothari, Roopayan Sansthan, dedicated to folk culture, where thousands of hours of recordings of folk music, musical instruments, costumes, artefacts etc., have also been collected. A lot of scholars from at home and abroad, visit this institution for research purposes.

The magic of Bijji's stories has fascinated countless filmmakers, dramatists, and TV serial-makers. Besides Mani Kaul, film personalities like Shyam Benegal and Prakash Jha made films based on his stories. Amol Palekar signed up with him for two films.

Noted Hindi writer and documentary filmmaker Uday Prakash made a film on Bijji for Sahitya Akademi. He has also made a series of ten telefilms titled *Bijji Ka Khajana*, for Doordarshan, Jaipur, based on his stories. In several cities all over the country, the dramatised versions of his stories have been staged. *Charandas Chor*, directed by the celebrated theatre director Habib Tanvir, attained legendary success wherever it was staged, both within the country and abroad.

"Let alone writing, I am merely learning to read," says Bijji even after many awards have come in search of him; besides Sahitya Akademi Award, Bharatiya Bhasha Parishad Award, Kolkata, Bihari Puraskar of the K.K.Birla Foundation. Nahar Puraskar, Mumbai, Rajasthanshree, Jaipur, Rajasthan Ra Ratan, Ajmer, The Great Son of Rajasthan by All India Conference of Intellectuals, Marudhara, Kolkata, Deep Chand Jain Sahitya Puraskar, Delhi, are some of the important ones he received. Doordarshan and Akaashvani have honoured him with their Emeritus Fellowships. Bharatiya Jnanpith has granted him a Special Fellowship for fiction-writing based on "Love-stories of Rajasthan."

Bijji has travelled abroad extensively, visiting Amsterdam, Paris, Hamburg, Frankfurt, Heidelberg, Moscow, Leningrad, and cities in Belgium and China.

Bijji has till now done no other work to earn a living. Even at the age of 80, he runs about like a rebellious teenager, with interest only in reading and writing. When he reads, he doesn't care whether the writer is big or small, young or old—if he likes the work, he will praise it; if he doesn't, he will stop reading it immediately. Spontaneity is his virtue; he is irrepressible, both in writing and reading. Says he: "I had read Rabi Babu long ago. But, I could reach up to his great lumenescense for the first time only in 1984 after reading his short story "Streer Patra."

Bijji keeps on going back to texts—whether his own or by others. The text is dearest to him. One finds him saying again and again: "One thing I could learn by reading is only this truth: that I am learning to read."

Sahitya Akademi is honoured by conferring its Fellowship today on Vijaydan Detha, the peerless Indian fiction writer in Rajasthani.